Date - 29/6/20

DOMS Page No.

Date / /

Name - Raj Kapoor verma

college name - ShaKuntalam Institute of teachers education At - Krihindi Kumhu station Sasaram.

Class - B.Ed 1st year

paper - C-2 unit - 5

मूल्यांकन

EVALUATION

मूल्यांकन शब्द का शाब्दिक अर्थ मूल्य का अंकन करना है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मूल्यांकन मूल्य निर्धारण की एक प्रक्रिया है मूल्यांकन के अन्तर्गत किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के गुणों अथवा विशेषताओं की वांछनीयता पर दृष्टिपात किया जाता है। मूल्यांकन एक ऐसा कार्य या प्रक्रिया है जिसमें मापन से प्राप्त परिणामों की वांछनीयता का निर्णय किया जाता है।

जेम्स एम० ब्रेडफील्ड के अनुसार :-

"मूल्यांकन का कार्य घटनाओं के लिए प्रतीक निर्धारण करना है जो विभिन्न घटनाओं की उपयोगिता अथवा महत्व को सांकेतिक रूप देता है। साधारणतया यह कार्य कुछ विशिष्ट सामाजिक सांस्कृतिक या वैज्ञानिक स्तरों को मापने के लिए कराया जाता है।"

DOMS Page No.
Date / /

2 क्विलन और हन्ना के अनुसार :-

बालकों द्वारा विद्यालय में प्रगति करने पर उनमें जो व्यावहारिक परिवर्तन होते हैं उनके विषय में सूचना एकत्रित करके एवं उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।

अतः हम कह सकते हैं कि मूल्यांकन एक व्यापक पद है जिसमें मापन तथा जाँच दोनों निहित हैं मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जो निरन्तर चलती रहती है इसके द्वारा बालकों के व्यावहारिक परिवर्तनों की जाँच की जाती है।

मूल्यांकन के उद्देश्य

मूल्यांकन प्रक्रिया के उद्देश्य निम्नलिखित हैं —

1. सामान्य उद्देश्य — यह मूल्यांकन प्रक्रिया का पहला चरण है इसमें यह ज्ञात करना है कि वे कौन से शैक्षिक उद्देश्य हैं, जिनकी प्राप्ति की वांछनीयता को ज्ञात करना है।

DOMS Page No. Date / /

2. विशिष्ट उद्देश्य – दैनिक शिक्षण कार्य करते समय अध्यापक के मस्तिष्क में सदैव ही कुछ तात्कालिक प्राप्त उद्देश्य होते है जिनकी प्राप्ति कक्षा, शिक्षण के दौरान संभव है, ये व्यावहारिकता पर आधारित होता है तथा इन्हे अल्प समय में प्राप्त किया जा सकता है।

3. शिक्षण बिन्दु –

इसके अन्तर्गत उन शिक्षण बिन्दुओं को निर्धारित किया जाता है जिनके द्वारा विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है। पाठ्यवस्तु के किसी भी प्रकरण को शिक्षण की सुविधा की दृष्टि से छोटे-2 भागों में बाँटा जा सकता है।

4. अधिगम क्रियाएँ – छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन कुछ अधिगम परिस्थितियों की सहायता से ही लाए जा सकते है। ये अधिगम परिस्थितियाँ छात्र एवं शिक्षण उद्देश्यों के बीच के शैक्षिक सम्बन्ध को स्थापित करती है। तथा इसके परिणामस्वरूप छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन आते हैं।

5. व्यवहार परिवर्तन —

अधिगम क्रियाओं के उपरांत छात्रों के प्रस्तुतीकरण के में होनेवाले व्यवहार परिवर्तनों को ज्ञात करना होता है।

6. मूल्यांकन —

बच्चों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों को ज्ञात करने के उपरान्त इन व्यवहार परिवर्तनों की वांछनीयता की सापेक्ष व्याख्या की जाती है। इसके अन्तर्गत छात्रों के व्यवहार में आये परिवर्तनों की तुलना पूर्व में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तनों से की जाती है।

7. प्रतिपुष्टि (feedback) —

मूल्यांकन प्रक्रिया का अन्तिम पद परिणामों को प्रतिपुष्टि के रूप प्रयोग करना है। यदि मूल्यांकन से ज्ञात होता है कि शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हुई है तो वह प्राप्त परिणामों के आधार पर अपने शिक्षण कार्य में सुधार करता है। इस प्रकार से मूल्यांकन के परिणाम शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने

के लिए आवश्यक प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष –

इस प्रकार स्पष्ट है कि मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मापन से प्राप्त परिणामों की वांछनीयता का सूचक होता है। साथ ही छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को अंको में व्यक्त करना मापन का उदाहरण है।